परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी

श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक

सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका

श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884

श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष

सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक

राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972

खुशालचंद जैन, 9302123879

कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक

बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

हमारा नगर हमारे मंदिर - अतिशय क्षेत्र बनेड़ियाजी

मंदिर में स्थापित मूर्तियों के चमत्कारों की गाथाएं जो आपने कई बार सुनी होगी लेकिन क्या आप मध्यप्रदेश के इस प्राचीन मंदिर की दिव्यता के बारे में जानते हैं? 1000 से ज्यादा वर्ष पुराने इस मंदिर की विशेषता है कि इस मंदिर को कभी किसी ने बनवाया नहीं, बल्कि ये देवलोक से उड़कर यहां पहुंचा है। वैज्ञानिक भी आज तक इस बात का राज नहीं तलाश सके हैं कि बिना नींव के भारी दिवारों वाला यह मंदिर यहां कैसे स्थापित हुआ। मध्यप्रदेश के इंदौर शहर की देपालपुर तहसील के बनेडिया गांव में स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनेड़िया जी, जैनियों के प्रमुख तीर्थस्थल में शामिल है। इस मंदिर से जुड़ी प्राचीन कथा इसे बेहद चमत्कारी बनाती है। कहा जाता है कि ये मंदिर यहां प्रकट हुआ है इसे बनवाया नहीं गया। इस बात की सच्चाई जाननें के लिए मंदिर की खुदाई करवाई गई तो लोग चौंक गए। खुदाई में कहीं भी पक्की नींव का पता नहीं चला। बिना किसी ठोस नींव के यहां स्थापित इस अष्टकोणी भव्य मंदिर में एक भी खंभा नहीं हैं और मंदिर की दीवारें 6 से 8 फीट चौड़ी है।

चौथे काल की प्राचीन पाषाण प्रतिमाएं - मंदिर के निकट रहने वाले संजय जैन ने बताया कि हम छ: पीढ़ियों से इस मंदिर की सेवा में जुटे हैं। पूर्वजों से यही सुना है कि एक तपस्वी मुनिराज इस मंदिर को लेकर कहीं जा रहे थे, किसी कारणवश उन्होनें मंदिर को यहां रखा और तपस्या करने लगे, शाम हो गई तो मंदिर यहीं स्थापित हो गया। तब से ये मंदिर यहीं है। मंदिर में भगवान 1008 अजीतनाथ जी की प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा मणिभद्र बाबा का क्षेत्रकाल भी यहां है। यहां सफेद पाषाण की कई प्राचीन मूर्तियां भी है जिन पर 1248 संवत विक्रम का समय लिखित में अंकित है। ये मूर्तियां चौथे काल की बताई जाती है।

पूर्णिमा की पूजा का है महत्व - मंदिरजी की व्यवस्था को संभाल रहे गंगवाल परिवार ने बताया कि ये भारत का एकमात्र अतिशय क्षेत्र है जिसकी नींव नहीं है। यहां पर पूर्णिमा को विशेष पूजा होती है और मेला लगता है जिसमें देश के कोने-कोने से श्रद्धालु शामिल होते हैं। मान्यता है पूर्णिमा को यहां पूजा में शामिल होने से हर मनोकामना पूरी होती है। इसी मान्यता के चलते कई श्रद्धालु लगातार सात, आठ या पन्द्रह पूर्णिमा तक निरंतर यहां आते हैं।

4 फीट ऊंची भगवान अजितनाथ की प्रतिमा - इस भव्य प्राचीन मंदिर के पास एक बड़ा तालाब है। मुख्य मंदिर गोलाकार है जिसमें भगवान 1008 अजीतनाथ जी की लगभग 4 फीट ऊंची प्रतिमा स्थित है। इस मूर्ति के अलावा भी मंदिर में कई प्राचीन मूर्तियां मौजूद है। जिनमें 1008 भगवान आदिनाथ, भगवान चंद्रप्रभु, भगवान पार्श्वनाथ और भगवान शांतिनाथ की मूर्तियां शामिल है। मूल प्राचीन मंदिर को श्रद्धालुओं ने भव्य मंदिर का रूप दे दिया है। मंदिर तक पहुंचने के लिए इंदौर से बस या कार या बाइक किसी के द्वारा भी आया जा सकता है। इंदौर से 45 किमी दूर देपालपुर से 4 किमी की दूरी पर स्थित है ये दिव्य चमत्कारी मंदिर।

संकलन- अनुपमा जैन, इन्दौर

नवीन मंदिर के लिए निर्माण पूर्व कुएँ का भूमि पूजन संपन्न - श्री गोलालारीय दिगम्बर समाज न्यास के नवीन मंदिर निर्माण जो कुम्हेड़ी स्थित आदिनाथ नगर में होना है। उस मंदिर व्यवस्था हेतु कुएँ का निर्माण का भूमि पूजन समाज के स्थायी ट्रस्टीगण, समाज की प्रबंध कार्यकारिणी सदस्यों के साथ समाज के वरिष्ठ उपस्थित रहें। शीघ्र ही कुएँ का निर्माण कर नवीन मंदिर का निर्माण के लिए भूमि शुद्धि एवं भूमि पूजन का कार्यक्रम अप्रैल माह के अंत तक प्रस्तावित है।

अनुकरणीय पहल...

अपनी खुशी के लिये तो सभी जीते हैं लेकिन दूसरों की खुशी और दूसरों के सु:ख दु:ख में सहयोगी बनकर बहुत कम लोगों की सोच बनती है, विदिशा में श्री कुंदनलाल जी मानोरिया की धर्मपत्नी श्रीमति कुसुमबाई मानोरिया के देहावसान उपरान्त श्री कुंदनलालजी मानोरिया ने अपनी जमा पूंजी 25 लाख रूपये पारमार्थिक ट्रस्ट का निर्माण करा। यह ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका में सहयोग एवं पाठशालाओं को प्रोत्साहन और धर्मार्थ कार्यों के लिये कार्य करेगा। जिसकी अनुमोदना उनके दोनों पुत्र श्री राजेश मानोरिया एवं संजय मानोरिया ने करते हुए पूज्य माताजी की स्मृति को सदैव ताजा बनाये रखते हुए की। स्थानीय समाज ने उनके इस प्रयास की बहुत सराहना की।

* विनम्र श्रद्धांजली *

* श्री राजकुमार जैन व ऋषभ जैन, अहमदाबाद की पूज्य माताजी **श्रीमती कपूरीदेवी** धर्मपत्नी स्व. श्री गयाप्रसादजी का देवलोकगमन दि. 21 जनवरी 18 को अहमदाबाद में हो गया। आप धार्मिक एवं सरल स्वभाव की महिला थी।

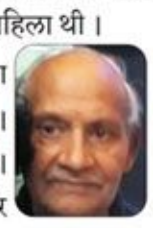

* **श्री दीपचंदजी जैन** डंगराने वालों का देवलोकगमन दि. 22 जनवरी 18 को इन्दौर में हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति एवं समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी थे। समाज मंदिर के लिए आपने समय-समय पर अपने परिवार की ओर से सहयोग किया।

* श्री कुन्दलालजी मनोरिया की धर्मपत्नी **श्रीमती कुसुम मनोरिया** का देवलोकगमन 22 जनवरी 18 को विदिशा में हो गया। आपकी स्मृति में परिजनों ने एक धार्मिक व पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना की। जिसमें धर्म, शिक्षा व सामाजिक कार्य के लिए सहयोग किया जावेगा।

* स्व. हीरालालजी जैन सायकलवालों के द्वितीय सुपुत्र **श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, भोपाल** का देवलोकगमन 25 जनवरी 18 को भोपाल में हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभाव व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। निधन पश्चात आपकी मंशा अनुसार परिजनों ने आपकी देहदान कर एक अनुकरणीय कार्य कर समाज के लिए एक विस्मरणीय मिसाल पेश की।

गोलालारीय दर्शन के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण

घोषणा फार्म - 4 (नियम 8)

1.	प्रकाशक स्थल	127, देवी अहिल्या मार्ग, इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
5.	संपादक का नाम	राजेन्द्र जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	डीकेएन 230, विजय नगर, इन्दौर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों	श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास, इन्दौर

मैं बाहुबली जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

बाहुबली जैन

1 मार्च 2018 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)